वापसी

(लघु उपन्यास)

वापसी

डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका संसद
सराय भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.१८१००५.०.८

प्रथम संस्करण
२०२६

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
सौ रूपये मात्र

Wapsi (Novel) Rs.-100/-
By Dr. Abha Purbey

छोटों दियोर

महानंद साह

कें

बड़ों स्नेह के साथें!

—आभा

ई लघु उपन्यास लेली

कै दाफी मनों में ऐलै कि ई उपन्यास लेली कुछ लिखना चाहीयों, पर की लिखियै? यही समझै में नै आवै। उपन्यास में हेनों कोय उलझाव तें छै नै कि सोझराय कें रखलों जाय।

हों, एक बात जरूरे मनों में आवै कि जहाँ उपन्यास के पूर्ण काया लेली कम-सें-कम सत्तर-अस्सी हजार शब्दों के होना जरूरी छै, हेना में एकरा कोय उपन्यास मानतै कि नै.....के की कहें पारें। ई अलग बात छै कि उपन्यास लेली जे बात होना चाही, ऊ तें 'वापसी' में छेवे करै। लघु कथा के तर्ज पर लघु उपन्यास ही सही। आबें जौंने जे कहें। उपन्यास सामना में छै।

—आभा

वसंतोत्सव
३ मार्च २०२६ ई.

सम्पर्क : संपादक, नया हस्तक्षेप
शरद चंद पथ, मशाकचक,
भागलपुर, बिहार, पिन-८१२००२



८ □ वापसी

वापसी

''आखिर अस्सी पार करतें-करतें गनेशी अपनों देह तेजी देलकै। देह तें वैं सुरुज देवता के उगै के पहलें तेजी देलें छेलै, मतर लोगों कें एकरों पता तभिये चल्लों छेलै, जबें सुरुज सरंग में बीचोबीच आवी गेलों छेलै। एकरों पहले पतो केना चलतियै, गनेशी तें रोजे तभिये घोंर लौटै, जबें घरों के ढिबरी-लालटेन भुकभुकावें लागै। घरों में हेनों कुछ छेवे करलै की, जे द्वार खुल्ला होय के डोंर रहतियै। गनेशी के कनियांय दुखनी टटिया भिड़काय दै आरो ओघराय रहें, अपनों पति के आस देखतें-देखतें ओकरों आँख कखनी लगी जाय, एकरों पता ओकरो नै चलै। आधों रात बितला पर जबें नीन चाँक हुवै, तें उठी कें ऐंगना दिस देखी लै। टटिया गिरलों देखी कें समझी जाय, कि जीतो के बाबू आवी गेलों छै। वैं दरवाजा लगावै, आरो एक दाफी कोठरी हुलकी लै कि गनेशी खटिया पर सूतै के बदला हेटों में तें नै लुघड़ी गेलों छै। हेनों कै दाफी होय चुकलों छेलै। आखिर करंख हेनों देहों में जाने कत्तें बची गेलों छेलै कि जमीन पर गिरला के बाद ऊ उठी कें खटिया पर सूतें पारतियै।

जबें दुखनी नें देखलकै कि ऊ खटिया पर एकदम चित्त पड़लों छै, तें वहीं खाटिया सें सटले चटाय बिछाय कें ओघराय रहलै। ई

रोजकों खिस्सा रहै।

मतर हौ दिन गनेशी आधों रात बितला के बादे घोंर लौटलों छेलै। आरो दुखनी कें भी हौ दिन हेनों नीन ऐलों छेलै कि ओकरों आवै के कुछ पते नै लगलै।

भोररियां आँख खुललों छेलै, तें कोठरी के बाहरे सें झाँकी लेलें छेलै। सोचलकै, कुछ बेसिये चढ़ाय लेलें छै, से जबें नीन खुलतै, तें खुलतै। नीन खुलतै तें अपने बड़बड़ैतै। यहा तें ओकरों रोजकों खिस्सा छै, खटिया सें उठवो नै करतै कि एक लोटा पानी माँगतै आरो जों कतियो टा देर होलों कि ठोठों फाड़ी कें चिकरवों शुरू करलकौं। दुखनी के यहा कोशिश होय छै कि पति के उठला के पहिलें लोटा भरी पानी खटिया नीचें रखी दै। कभी कदाल देरो होय जाय, देर करै के कारणो रहै। बेसी देर लोटा में पानी रहला के बाद वैमें छाली पड़ें लगै। तें कोशिश करै कि ठीक उठला के बादे पानी लानी कें रखें।

ऊ दिन हेनों कुछुए नै होलों छेलै। नीन खुलै के आसरा में दुखनी बीसो दाफी चौखट तक आवी चुकलों छेलै, मतर गनेशी के नीन जेना आय खुलैवाला नै छेलै।

जबें दुखनी के सबर के बान्ह टूटी गेलै, तें वैं आपनों पति के माथो छूलें छेलै, कहीं तेज बोखार-ओखार तें नै चढ़ी ऐलों छै। अरे बाप, गनेशी कें बोखार की ऐतै, ओकरों देह तें एकदम ठंडा छेलै। मुँहों सें फेन निकलतें देखी कें पहलें तें वैं यहा सोचलें छेलै कि हेनों तें होते रहै छै। ओकरा घिन तें आवै, मतर कुछ बोलै नै। एक दाफी बोललो छेलै, तें गनेशी घरों में खूब गरजलों छेलै। तहिये सें दुखनी कुछ नै बोलै छेलै। मतर आयकों रंग-ढंग तें एकदम अलगे छेलै। आरो जबें ओकरों नजर पति के खुल्ला आँखी पर गेलै, दोनों एक दिस लटकलों, तें ऊ चीखी पड़लै। ऊ एत्तें जोर सें दहाड़ मारी कें कानलों छेलै कि सौंसे गाँव जुटी ऐलों छेलै।''

खखरी माय नें अँचरा सें आपनों आँख पोछतें आगू कहलें छेलै, ''पड़ोस के लोगें एकरों सिवा करौ की पारै छेलै कि छोटका दियोर

के ठठरी उठैलें छेलै आरो नदी कछारी में फूँकी ऐलों छेलै। सोचें पारै छों छोटकी कनियांय, वहू रात जीतो माय के पास खाय लें कुछ नै छेलै। है तें हमरा सिनी बाद में जानलियै कि दू दिन ऊ खड़े उपास पर रही गेलों छेलै। तबें श्राध-उराध के बाते कहाँ उठै छेलै, मतर तोरों सास जत्तें दुखियारी रहौं, पति के सुख-शांति लेली तें ऊ नरको के दुख भोगै लें तैयार छेलै। हमरो लुग ऐली आरो कहलकै, ननद, हमरों लुग अभियो हौ चानी के कड़ा छै, जे हमरों माय अपनों हाथों सें खोली कें हमरों हाथों में डाली देलें छेलै। ऊ अभियो रखलों होलों छै। तोहें एकरा केकरो कन बन्हक रखवाय दौ, आकि बिकवाय कें हुनकों आत्मा के शांति लेली जेटा करें पारै छों, करवाय दौ। नै टोला-गोतिया भरी के हाथ घुलावें पारवै तें की, पाँच टा ब्राह्मण के आगू पत्ता तें बिछी जैतै। हुनकों आत्मा कें शांति मिलतै, तें हमरौ शांति मिली जैतों।

जबें हुनिये नै, तें चूड़ी-सिनूर आरो की गहना-आभूषण। गोदी में तीन टा लाल सौंपी गेलों छोंत, केन्हौ कें पाली-पोसी कें लायक बनाय दियै आरो की? जहाँ ताँय हमरों जिनगी के सवाल छै, ऊ तें खेपैये जैतै। बड़का, मँझलका, छोटका, चौदह, बारह, दस, के छेकै। भगवानें जीभ देलें छै, तें आधारो देवे करतै।

''आरो देखों, भौजाय के बात पूरा होलै। तोरा, जाय के हड़बड़ी तें नै छौं बहू। एक तोंही तें छौ कि भौजाय के धरती छोड़ला के बादो, ससुराल के देहरी कें भुललों नै छों। साले में सही, आविये जाय छों। आन्हे चाहियों, ससुराल तें बिहेली बेटी लें स्वर्ग समान होय छै। आरो फेनु एक तोंही तें आवै-जाय छों। बड़की कहाँ आवै-जाय छै, तोरे नी बहिन छेकौं, मतर सोभावों में कत्तें अन्तर। एकदम छत्तीसवाला सोभाव। अच्छा होलै कि जीतो माय नें है सब देखै के पहले आँख मुनी लेलकै। नीतो के तें सोभाव होने छै, जेन्हों छेलै। मतर है तें बतावों कि तोरों भैसुर यानी हमरों भतीजा के सोभाव होने छै, कि जनानी के सोभावों में अपनों सोभाव छोड़ी-छाड़ी देलें छै। नै, नै, हमरा है सब नै पूछना छेलै, आखिर जीतो के कनियांय तोरों बड़ी बहिन होलौं आरो

जीतो भी भैसुर, भला भैसुरो के विरुद्ध कोय भबहू बोलै छै। आबें तोहें बोलों कि नै बोलों—गाँववाला के मुँहों कें के रोकें पारतै। है बात कें वैं जानै छै कि जीतो के आय कारखाना के मनैजरी मिली गेलों छै, तें यही गामों के काली चाचा के कारन। ऊ दिन केना हुनी अपनों बंगला पर पंचायत बैठैलें छेलै आरो सबके बीचों में दुखी भौजाय कें जोरों-जोरों सें सुनाय के कहलें छेलै—आबें तोरा जीतो, नीतो आरो हीतो के चिंता नै करना छै। हीतो तें अभी छोटों छै, यैलें ओकरा शहर भेजना ठीक नै, फेनु तोरो लुग तें कोय रहना चाही, तोरों देख-भाल लें, हों जीतो-नीतो कें जरूरे शहर लै जैवै, जहाँ हमरों एक दोस्त -- बड़का कारखाना के मालिक छेकै। कही देवै, तें एक्के साथ दोनों कें नौकरी पर रखी लेतै। तोरा चिंता कटियो टा नै करना छै। तोरा अपनो चिंता नै करना छै। है गाँव छेकै, शहर नै कि बेटा माय-बाप तक नै पहचानै छै, आरो मौगी के बातों में आवी कें सास-ससुर वास्तें एकदम बदहवास। भगवान चाहतै तें जीतो, नीतो के ब्याहो बढ़िया घराना में होतै, सब किसिम सें निचिन्त रहों।

''आरो देखों बहु, काली चाचा के बात कटियो टा गलत नै निकललै, दोनो भाय के एक्के कम्पनी में नौकरियो मिललै आरो दोनो के बीहो होलै, तें एक्के घरों में।.... अरे हम्में तें खाली तोरा सें गप्पे करै में लगी गेलियौं। जरा रुकों, पहलें तोरों वास्तें शर्बत बनाय कें लै आनियौं, आबें तें घरो में हम्मी नी। बेटी छेलै, आबें तें ओकरो घोंर बसी गेलै। ठहरों आवै छियौं।''

कहतें-कहतें ऊ जेन्है उठलै कि नन्दिता नें हाथ जोड़तें कहलकै, ''चाची, तोहें बैठों, हमरा कुछ लेना होतै, तें हमरे घोंर छेकै, लै लेवै। तोरों लुग आवै छियौं तें कटियो टा नै लगै छै हमरी सास आबें ई दुनियां में नै छै।''

''की कहै छों बेटी, बड़की भौज के बराबरी हम्में की, टोला भरी में कोइयो नै करें पारै छेलै। जब तांय जीत्तों रहलै, अपनों पति आरो संताने वास्तें। की नै दुख उठैलकै। फेनु नेम-धरम में कटियो टा

कोर-कसर नै। बिहनकी बेरा तुलसी में जोंल ढारने बिना चैन नै मिलै, नै सँझकी वक्ती संझवाती देलें बिना। आबें तें घरों में ढिबरियो तांय ठीक सें नै जलै छै। के छै घरों में, एक हीतो ही नी। घोंर-द्वार देखतै कि पेटों के इंतजाम में हिन्नें-हुन्नें करलें फुरतै। यहीं पर बड़का दां गलती करी गेलै। दुखियारी भाभी के गोद में बच्चा के भविष्य के कोय इंतजाम करले बिना आँख मुनी लेलकात। गोस्सो आवै छै कि हुनी बापों के करम नै निभैलकै, खाली बोतलों के चिंता में बेहाल, नै घरों के फिकिर, नै अपनों देह-हाथो के।.... अगे माय, कत्तें बेरा होय गेलै। हे बहु, जों हमरा कन पानी-ऊनी लैमें लाज लगै छौं, तें जा घरे में खाय-पीवी लियों। अठबज्जी टरेनो आवै के समय होय रहलों छै। हीतो कामों सें लौटते होतै। अच्छा करलकै कि सेठों के यहाँ नौकरी पकड़ी लेलें छै। जे कहों बहू, है उमिर छेकै चाकरी करै के। बड़का भाय कंपनी में बड़का पदों पर छै, चाहतियै तें अपने लुग रखें पारै छेलै। चाहवो करलें होतै, मतर कनियैनी के सोभावे के कारणे नै रखलें होतै। जीतो के सोभाव तें हम्में ओकरो बचपने सें जानै छियै। कभी-कभी सोचै छियै कि तोरों हेनों तोरों बहिन के सोभाव कैन्हें नी होलै। हे बें देखों, तोरा हम्में फेनु गप्पों में फँसाय लेलियौं। आबें जा। देखों टरेनो के सिटियो सुनाय पड़ें लगलै। हम्मू अपनों घोंर कें संवारी लियौं।'' कही कें खखरी माय उठलै, तें नन्दिता भी धीरें-धीरें चलीकें घरों सें बाहर होय गेलै।''

(२)

''भाभी, तोहें! कखनी ऐलौ? कोय खबर तांय नै करलौ!'' हीतो नें द्वारी पर ठाढ़ी छोटकी भाभी नन्दिता कें देखलकै, तें गोड़ छूतें हैरत सें पूछलकै।

''ऐलों तें तीन घंटा भै गेलै। मँझलकी काकी कन बैठलों छेलियै। द्वार पर ताला लगलों देखलियै, तें समझी गेलियै तोंय कोय कामों सें बाहर निकल्लों होलों छों।''

''हों, गिरिधर सेठ के चाकरी मिली गेलों छै, यहा तें दस दिन होलों छै।'' ताला खोलतें हीतो कहलें छेलै।

द्वार खुल्ले छोड़ी कें दोनो ऐंगनों आवी गेलों छेलै।

''अरे, भाभी तोरों सामान, मतलब कि बैग आरनी?''

''ऊ तें चाचिये कन छोड़ी ऐलियै। कोय बात नै, तोहें आवी गेलौ, तें लै आनै छियै या कखनियो लै आनवै; चिंताहै कथी के!''

''नै, नै, हम्में तुरत लै आनै छियै। तोहें तब तांय मायवाला कोठरी में आराम करों। ऊ कोठरी तें तोरों गेला के बाद कभियो खुलवो नै करै छै। हुवें सकै छै, हमरा लौटै में कुछु देरो लगी जाय, हुन्नें सें सामानो आरनी लेलें ऐवै।''

''अरे तोरा कुछुवो करै के जरूरत नै छै। हम्में स्टेशन सें उतरतैं ढेरे सामान लै लेलें छियै। तोहें चाची यहाँ सें हमरों बैग तें लै आनों।'' नन्दिता नें मुस्कैते कहलकै, तें वहू बुतरुए नाँखी दौड़तें ऐंगन सें बाहर निकली गेलै।

ओकरों बाहर निकलना छेलै, कि नन्दितां कोठरी खोललकै। चाभी तें चौखटे सें लटकतें रहै, अभियो छेलै। भीतर ऐलै तें सब कुछ सड़ियैलों मिललै। खटिया पर बिछौना तांय साफ-सुथरा। थकलों तें छेवे करलै, टांग नीचें रखले चित्त लेटी गेलै, ढेर सिनी पुरानों बात कें याद करतें—जबें ऊ बहू होय कें ई ऐंगनों में गोड़ रखलें छेलै, तें केन्हों हुलासों सें सास साथें टोला के आरो-आरो सवासिन नें ओकरों स्वागत

में की-की नै करलें छेलै। सजैलों चंगेरा में गोड़ रखतें ऊ ऐंगनों पार करलें छेलै। तखनी दीदी भी वहीं छेलै, वैं कोन्हराय कें ओकरा देखलें छेलै। शादी के एक्को रस्म में ऊ नै दिखैलों छेलै। नै जानें कैन्हें, आरो फेनु मालूम होलों छेलै कि दोसरे दिन आपनों सामान सड़ियैलें रहै आरो पति साथे राँची निकली गेलों छेलै, कार्य के व्यस्तता बतैतें हुएँ। घरों में केकरो ई अच्छा नै लगलों छेलै, मतर बोललों छेलै कोइयो कुछ नै, माइयो तक नै। हम्में दस रोज यहाँ रहिये कें राँची गेलों छेलियै। हों, लौटै वक्ती सास नें एतना जरूरे हमरा सें कहलें छेलै, ''बड़की बहू तोरे तें बड़की बहिन छेकौं, मतर सोभावों में तोरा सें बड़ों नै। आरो फेनु बड़की कें कथी लें कुछ कहवै। जीतो भी तें नीतो के ही बड़ों भाय छेकै, नै जानै छेलियै कि जनानी पीछू हेनों लट्टू होय जैतै कि माय के इच्छा-अनिच्छो के खयाल नै करतै।'' दीदी के है रं निकलवों तें हमरौ अच्छा नै लगलों छेलै, मतर आबें ऊ बड़ी गोतनी भी छेलै–नन्दिता कें एक-एक बात याद ऐतें चललों गेलै। केना सास के आँख मुंदला के बाद ऊ हीतो कें लैकें राँची आवी गेलों छेलै। कम्पनी दिस सें मिललों क्वार्टर के दू कमरा, एक दीदी के, दोसरों हमरो। हमरा हीतो कें साथ देखी कें दीदी की रं रुक्खों बोली में कहलें छेलै, ''हीतो के यहाँ लानै के की जरूरत छेलै। घोंर के जोगतै। दोनों बड़ों भाय कमैवे करै छै, कुछ-कुछ पैसा भेजी देतै, आरो की!'' दीदी के है बात दियोर कें जरूरे चुभी गेलों होतै, नै तें हेना कें रात्हे में कैन्हें निकली जैतियै। हम्में तें एकदम परेशान होय गेलों छेलियै, मतर दीदी कहले छेलै, ''नाकी सें दूध तें नहिये नी गिरै छै कि ओकरों के चिंता करलों जाय, घोंर गेलों होतै। गाँव में फैलारो सें रहैवाला कें भला शहर के साँकरों जग्घो पसंद ऐतै।'' ई तें जाय वक्ती वैं क्वार्टर के एक रखवारो कें बताय देलें छेलै कि ऊ गाँव लौटी रहलों छै, नीतो भैया कें ई बात बताय दियौ आरो फेनु हीतो घुरी के राँची नै ऐलों छेलै।

केहनों निठुर होय कें दीदी बोली गेलों छेलै। आरो बीहा के बाद जबें कोख भारी होलों छेलै, तें केन्हों निहोरा करी हीतो कें नैहर

बुलाय लेलें छेलै, टहलुआ रखतियै, तें ओकरों पीछू टाका जे खरच करै लें पड़तियै। पक्का साल भरी अपनों लुग रखलकै आरो निकाललकै तें ई कही कें कि घरों में माय के देखभाल के करतें होतै, गलती करलियै जे तोरा बोलाय लेलियों ..... हों दीदी गलती तोहें जरूरे करलें छेलौ। सास नें तें हीतो कें यै लेली भेजलें छेलै कि शहर में रहतै, तें पढ़ी-लिखी लेतै। दू पैसा कमाय के लूर आवी जैतै। मतर तोहें ई कहाँ चाहै छेलौ, तोरा तें एक चाकर के जरूरत रहौं। तोरों जग्घों पर हम्मे होतियौं नी, तें हीतो कें नै लौटें देतियै। ट्यूशन करतियै आरो पढ़ाय देतियै। आय सेठों कन चाकरी तें नै करै लें लगतियै। बीहा तें हीतो के भी होतै, होतै तें घोंर गृहस्थी केना चलतै....।

''भाभी! है लें अपनों अटैची आरो बैग। कत्तें भारी छौं। मन भरी अन्न से कम भारी नै।''

हीतों के मुँहो सें मोंन भरी अन्न के बात सुनी कें ओकरा ख्याल ऐलै कि जरूर एकरा यहाँ खाय-पीयौ में दिक्कत होतें होतै। मतर हुन्नें सें ध्यान हटाय कें बाहर निकली ऐलै आरो कहलकै, ''मोंन भरी कहाँ छै। मनों सें उठैतियौ, तें मोंन भरी नै लगतियौं। हम्में तें दोनो हाथों में ढोले आधों कोस चललों छियै। कहों, तें तोराहे उठाय कें दिखाय दियौ।''

हीतो नन्दिता के बात सुनलकै, तें हँसी कें वै ठां सें हटें लगलै। ''जाय छों कन्नें? लकड़ी जुटावों। भंसाघोंर ढुकै छियौं, खाना बनैवौं, आय हमरा दोनों कें एक-दूसरा के मुँह में कौर देतें खाना-खिलाना छै। तोरो भाय थोड़े हमरों साथ ऐलो छौं जे रोकतै!''

भाभी के हेनों बात सुनथैं हीतो लजैतें फेनु डेढ़िया सें बाहर निकली गेलै आरो अटैची उठैलें नन्दिता अपनों कोठरी—पोशाक बदलै के खातिर।

(३)

संझवाती करला के बाद नन्दिता औसरा दिस घुमलै तें देखै छै, हीतो छूरी सें झिंगली के छिलका उतारवों करी रहलों छै।

''अरे दियोरजी, है की करवों करी रहलों छों? जब तांय हम्में यहाँ छी, तोरा कोय काम करै के जरूरत नै छै।''

''तबें तें हमरों बदला तोहीं नहाय लेलों करों, अभी ठंडा दूर छै आरो हमरा इखनिये सें कँपकँपी लगना शुरू होय गेलों छै।'' हीतो नें छिलका उतारना छोड़ी देलें छेलै।

''वहू करी लेवै, पहलें ई तें बतावों, तोहें बीहा कहिया करवा। नै करवा तें यहा रं परोल-झिंगली छिलतें बुढ़ारी आवी जैथों।''

''हमरा सें के बीहा करतै। करियो लेतै, तें ओकरा पालतै-पोषतै के? सेठ कन नौकरी करै छियै, हजार रूपा महिनवारी मिलै छै। गाँव छेकै तें केन्हौ कें हमरों पेट भरी जाय छै। हजार में दू के पेट भरतै?''

''तोरा गाँव में रहना छै कथी लें। शहर में रहना छै, वहू में कोय छोटों- मोटों शहर में नै, राँची में!''

राँची के नाम सुनथै हीतो कें जना करेंट लगी गेलों रहें। छिलमिलैतें बोललै, ''नै भाभी, हम्में राँची तें कभियो नै जावें पारौं! छोटों छियै, तें बड़ों के काम करवों लाजिमे छै, मतर बड़की भौजी तें हमरा नौकर समझै छै। नौकरो के खुशी के ख्याल मालिक रखै छै। नै रखतियै तें सेठजी अग्रिम भुगतान करतियै? महीना पुरै में दस रोज बाकी छै। जाय कें बतैलियै कि पैसा के जरूरत छै, तें महीना पुरै सें पहिलें वेतन दै देलकै। आरो जबें हम्में घोंर आवे के बात पर बड़की भाभी सें कुछ रूपा माँगलियै तें की कहलकै, जानै छौ, कहलकै—जतना टा भाय कें कम्पनी में वेतन मिलै छौं, ओकरा में तें ठीक सें तीन आदमी के पेटो भरना मुश्किल—मोंन तें होलै कि कही दियै, घरों में माय लेली नै दिएँ पारै छौ, तें तीन महीना तांय तोरा कन खटलियौं, ओकरो मजदूरी ही दै दा। मतर नै कहलियै। चुपचाप रातो-रात भागी ऐलियै।

केना बेटिकट रेल सें ऐलों छेलियै, ऊ हम्मी जानै छियै आरो तोहें फेनु वहा दुआरी पर लै जाय लें चाहै छौ!''

''तोहें है केना जानलौ कि हम्में तोरा बड़ों भाय कन लै जाय के बात करी रहलों छियै। शायत तोरा मालूम नै छौं कि हम्में तोरों ऐला के बाद ठीक दसवें रोज क्वार्टर बदली लेलें छेलियै। तोरों मँझला भाय तें नै चाहै छेलौं, मतर हमरों अपनों जिद छेलै। तोरों बड़ी भावज हमरों दीदी छेकै नी–अपनों दीदी, मांगलो-चांगलो नै, तें हुनकों सोभावों सें हम्में खूब परिचित छियै, केकरो सें कुछ सुनै के जरूरत नै छै। हम्में तोरों लें एक प्राइवेट इस्कूली में नौकरियो के बात करलें छियै, कत्तो कम देथौं तें सेठ से जे पावै छों, ओकरा सें डेढ़ गुना बेसी तें जरूरे। नै बड़का भाय, मंझला भाय के साथ तें रहें पारों।''

''भाभी, आबें हम्में राँची जाब्है नै पारौं। यहाँ रही कें हम्में ऊ सब बात भुलाय गेलों छियै, जे हमरों साथ होलों छै। हम्में एक दिन अपनों कानों सें भाभी कें ई कहतें सुनलें छेलियै, आखिर कब तांय हीतो कें यहाँ रखवौ, गाँव में रहतै तें मैइयो के सेवा होतै, घरो के रखवाली होतै। यहाँ जे पैसा हीतो के पीछू खर्चा होय छै, ऊ माय कें भेजी देवौ, तें सोगारथ होथौं।

हम्में जानै छेलियै कि हेनों कुछ नै होतै, यहू पहलो दाफी जानलियै कि हमरों जरूरत बस दू महीना वास्तें छेलै। दुख तें एकरो छै कि भाय नें भी भाभी कें हेनों कहै सें रोकलकै नै। तबें हमरों लुग चारे की छेलै। चुपचाप रोतें रात निकली गेलियै। तोरो सिनी कें बिना कुछ बतैलें। ई बात भले तीन साल पहलकों छेकै, मतर लागै छै–कल के रहें। आय तोहें वही जग्घों पर जाय लें कहै छों। भाभी, है हुवै नै पारें।''

''अरे, तोरों वास्तें वहाँ हम्में एक लड़कियो देखी कें रखलें छियौं। तोंहें चाहवौ, तें अलग डेरो लै कें रहें पारों, रोकवौं नै।''

नन्दिता के बात सुनी कें हीतो लजाय गेलै। मूड़ी झुकी गेलै। उठी कें जावें लागलै, तें वैं फेनु रोकै के कोशिश में कहलें छेलै, ''उठै

के पहिलैं बोली दा कि हमरोॅ बात रहतै की नै?''

नै जानें कैन्हे आरो केना कें हीतो के मुँहो सें निकली पड़लै, ''ठीक छै, जों तोहरे रं उदार आरो शीलवाली लड़की होतै, तें हमरा 'हों' कहै में कोय आपत्ति नै होतै।''

नन्दिता नें वातावरण कें कुछ सरस बनाय के खयालों सें खुली कें बोललकै, ''तें कोय बात नै दियोर, तोहें हमरे सें बीहा करी ला! सब झमेले पार!'' आरो एतना कहथैं जोर सें खिलखिलाय पड़लै।

हीतो कें तें जेना साँप सूँघी गेलों रहें, मतर भाभी कें ऊ रं हँसतें देखी ऊ फेनु लाज सें दोहरा होय गेलै।

सब कुछ समझिये कें नन्दिता नें तुरत्ते कहलें छेलै, ''अरे गप्पों में तियोनो बनाना भूली गेलियै। तोहें हुन्नें चिकसों गूँथों आरो हिन्नें हम्में झिंगली छीलै छियौं। आय दोनों मिली कें खाना बनैवै आरो साथे खाय लें बैठवै। आगू-पीछू नै।'' आरो ई कही ऊ छूरी सें झिंगली के छिलका उतारें लगलै।

(४)

आधोंॅ रात तें बितये गेलोंॅ होतै। हीतो अपनोंॅ कोठरी में एकदम निचिन्त होय कें सुती रहलोंॅ छेलै। नन्दितो नें दरवाजा के हुड़का लगैलकै आरो खटिया पर चित्त पड़ी गेलै। थकान तें छेवे करलै। जरा-सा आँख बंद की करलकै कि नींदो ऐतें देर नै लगलै। कि वैं देखलकै, कोठरी के एक कोना रोशनी सें भरें लगलोंॅ छै। वैं डरोंॅ सें खूब जोरोंॅ सें आँख मुनी लेलकै, ताकि ओकरा कुछ दिखावें नै। मतर रोशनी तें जेना ओकरोंॅ बंद पलकोंॅ कें छेदी रहलोंॅ छेलै। वैं देखै छै, ऊ रोशनी के बीच सें एक औरत करखी में नहैलोंॅ ओकरे दिस बढ़ी रहलोंॅ छै आरो आवी कें खटिया के पासी पर बैठी रहलै। कुछ देर शांत रहला के बाद बोलें लगलै, ''डरै के कोय जरूरत नै छै, नन्दिता! हम्में, तोरो दीदी चाँदनी। रंग सें नै पहचानें पारवैं, हों लम्बाई-चौड़ाई सें जानें पारें, तें जानी ले। वही चाँदनी, जेकरा अपनोंॅ रूप के घमंड हेनोंॅ छेलै, कि वैं अपनोंॅ बहिन नन्दिता तक कें ओछोंॅ नजरी सें देखै छेलै। की काम नै केकरा सें करवाय लै छेलियै, अपनोंॅ रूप के बल्लोंॅ पर। तोरो तें याद होतौं, कॉलेज के क्लर्क नें हमरो प्रमाणपत्र दै में जबें ना-नुकुर करलें छेलै, तें आधोंॅ घंटा प्राचार्य लुग की बैठलियै कि हुनिये प्रमाणपत्र लेलें घोंॅर आवी गेलोंॅ छेलै। वही दिन हमरा लगलोंॅ छेलै कि औरत के पास जे ई देह छै नी, ऊ ओकरोंॅ दौलत छेकै, सुख छीनी लै के हथियार छेकै। एकरोंॅ बल्लो पर सम्राट आरो बड़का-बड़का रिसि-मुनी कें बान्हें पारें। जे औरत ई बात कें नै समझलें छै, ओकरा तें दुख भोगनै छै। मायं एत्तें-एत्तें दुख भोगतें रहलै, बाबू सें प्रताड़ित होलै; कैन्हें—ई तहूँ जानै छैं। हमरा होनोंॅ नै होना छेलै। हमरोंॅ बीहा होय गेलै, नीतो के बड़का भाय सें। जबें पहलोंॅ दाफी देखलें छेलियै, तें मोंन होलोंॅ छेलै, बाबू सें कही दीयै—हमरा बीहा नै करना छै।

''तोरौ मालूम छौ कि मँडवा पर केना धकेली कें हमरा बिठैलोंॅ

गेलों छेलै। बीहा जबें होय गेलों छेलै, तें हम्में तोरों जीजाजी साथें केना रही रहलों छेलियै, ई हम्मी जानै छियै। ऊ तें कम्पनी के आरो कर्मचारी सें हमरो भेंट-मुलाकात नै होतियै, तें हमरों जिनगी नरके छेलै। शांतनु बाबू जखनी हमरों सजवों के तारीफ करै, तें हम्मे बिछी जइयै। शुरू में हमरा जे शराब के गंध सें उलटी हुऍ लागै, वही एकदिन हमरों खानपान के हिस्सा बनी गेलै। पार्टी में केकरा सें गल्लों मिलवों कत्तें सुख दै, आबें याद करै छियै, तें डरें लगै छियै। आबें लगै छै, नन्दिता–तोंही ठीक छेलै! हमरा सें कम कहाँ पढ़ली-लिखली छैं। कुछ बेसिये छैं। तोरों पति, हमरों पति सें बेसी कमैवो नै करै छेलौ। तोहें हिन्नें-हुन्नें ट्यूशन करी पैसा लानै, तें घोर सजौ। चाहतियैं, तें कम्पनी में तोरा नौकरियो मिली जैतियौ, मतर तोहें अपनों इच्छा सें नै करलैं। आबें तोरा की बतैयौ, शांतनु बाबू के साथें हम्मे जे एत्तें खुली गेलों छेलियै, ओकरों पीछू हमरों यहा मंशा छेलै कि केन्हौं कें तोरों जीजाजीवाला नौकरी हमरा मिली जाय। मतर है केना हुऍ पारै छेलै, तखनी हमरों मनों में यहू ऐलों छेलै कि जीतो, तोरों जीजा मरी जाय तें ऊ जग्घों पर हमरा नौकरी मिली जैतै! की बतैयौ कि ऊ समय में हमरों मनों में केन्हों-केन्हों विचार उठै, शराब पीयै के आदत तें तोरों जीजा कें लगिये गेलों छेलौ, सोचियै ओकरा में विष मिलाय कें मारी दियै, यहू मनों में आवै कि जीतो साथें घुमै के बहाना कोय पहाड़ी पर जइयै आरो वहीं सें खाई में धकेली दियै, केकरो कुछ पतो नै चलतै, घरों में दफनैला सें पतो लगें पारें। तोरा सें की बतैयौ, यही लैकें हम्में ऊ तांत्रिको सें मिललों छेलियै कि जीतो के उमिर आखिर आरो कत्तें शेष छै। तांत्रिक ने एक मंत्र देलें छेलै, जेकरों कोय जनानी जाप करें, तें जल्दिये ऊ विधवा होय जैतै। तोहें तें हमरा हौ रूपों में नै देखलें छेलैं। लाल वस्त्र पिन्ही कें जखनी मंत्र जपियै, तखनियो हम्में कत्तें खूबसूरत लगियै। आबें समझें पारै छियै कि तांत्रिक दोपहर-शाम कैन्हें हमरा बुलावै। कहै तंत्र-साधना गुरु के सम्मुख ही ठीक-ठीक सें हुऍ पारें, जे जीतो के रहतें संभव नै छेलै। आरो फेनू एक दिन, हौ रात.....''

कहते-कहते नारी के आवाज हठासिये रुकी गेलों छेलै। नन्दिता जेना नीने में चीखी पड़लों छेलै, ''की बोली रहलों छैं दीदी, है कोंन बात, की होलै? खोली कें बोली कैन्हे नी रहलों छैं?''

मतर बोलतियै के? सामना में छेवे करलै कहाँ कोय? नन्दिता के चीख सुनी कें हीतो भी धड़फड़ैले अपनों कोठरी सें ऐलों छेलै आरो ओकरों कोठरी के दरवाजा पर दस्तक दिएँ लगलों छेलै, ''भाभी, दरवाजा खोलों! की होलौं, दरवाजा खोलों!''

नन्दिता केबड़ा खोललें छेलै। हीतो देखलकै, भाभी इस्थिर छेलै, मतर आँखी में कोय प्रश्न जना अभियो तैरी रहलों छेलै।

सामना में दियोर कें देखी, ऊ जबर्दस्ती ठोरों पर मुस्कान लानी बोललै, ''जा सुती रहों। आँख लगलै, तें कोय सपना आवी गेलों छेलै, हम्में ऐंगनों में कोय लकड़ी सें ठेंसी गेलों छियै, बस चीखी उठलियै। आरो कुछ नै।''

हीतो वापिस लौटलै, तें ई देखथैं लौटलै कि ऐंगनों में कोय झाड़-झाड़ी तें नै रखलों छै।

(५)

ससुराल ऐलों नन्दिता के दस रोज सें बेसिये होय रहलों होतै, जबकि वैं अपनों पति नीतों सें पाँचे रोज लें कही कें ऐलों छेलै, मतर यहाँ ओकरों हेनों मोंन रमलै कि यहू भूली गेलै कि नीतो ओकरों लौटी आवै के प्रतीक्षा में होतै। साल भरी के बाद अबकी फेनु सें खुल्ला जग्घों में साँस लै के मौका मिललों छेलै। नन्दिता मने मन सोचलकै -- प्रकृति के प्यार तें ओकरा राँचियो में कम प्राप्त नै छै, चारो दिस पहाड़े-पहाड़, गाछ-बिरिछ के ढकलों धरती आरो वहा बीच सें मानर-बाँसुरी साथें आदिवासी रों गूँजतें गीत! भले ऊ गीत के माने नै बूझै छेलै, मतर मोंन तें मोहिये लै छै। यहाँ भी गीत उठै छै, पराती-संझवाती साथें उठतें गोसांय गीत, एक-एक गीत के अरथ वैं समझै छै। ऊ दिन मंझली काकी ऐलों छेलै, तें केना ऐंगना में बैठलों-बैठलों गीत गैवों शुरू करी देलें छेलै,

गोरे-गोरे बहियां गे लिलिया
कारे शोभें गोदनमां रे जान
जान गोदना कें देखी मोहना तोरों लोभैलो रे जान!

नन्दिता कें एक-एक पंक्ति याद छै, मतर ई गीत के आखरी बात तें वक्त-कुवक्त बिना दोहरैलों रहै ऊ नै पारै छै,

जनमो मोर जैतै गे मैयो
परनमो मोरा जैतै रे जान
जान तैहियो नै छोड़वै मोहना केरो संगतियों रे जान।

आरो ई पंक्ति याद ऐथैं नन्दिता सिर सें पाँव तक कँपकपाय उठलै। कँपकपावै के कारण छेलै, दस रोज पहलें देखलों सपना। मनेमन कहलकै,

''तें, आखिर ऊ सपना आवै के की अरथ समझलों जाय। ओकरा झूठो मानना तें गलत होतै। दीदी के चेहरा जरूरे एकदम करिया छेलै, मतर नाक-नक्श में कटियो टा अंतर कहाँ छेलै। तें की सचमुचे में

कोय अनहोनी के संकेत छेकै! नै, हेनों नै हुऍ पारें। जों हेनों होतियै, तें अब तांय नीतो हमरा खबर नै करतियै। हम्में बेकारे कोय बातों कें बहुत बढ़ाय-चढ़ाय कें सोचें लगै छियै।

कि तखनिये फेनु ऊ बुदबुदाय उठलै, ''नै, हेन्हे कें बढ़ाय-चढ़ाय कें नै सोची लै छियै। हमरा याद छै, तखनी हमरों बीहो नै होलों छेलै। दीदीये ससुराल में कहाँ बेसी दिन रहलै। बिहा के बाद जे नैहर लौटलै, तें घुरी कें ससुराल लौटै के नाम नै लेलकै। कभियो कोय ससुराल के बात करै, तें यहा गीत के पहलों पंक्ति गावी कें ससुराल आरो अंगिका के मजाक उड़ावै। कहै, ससुराल में सब 'छै छू' में मंतर पढ़ै छै, कभियो हिन्दी में बाते नै करतें देखै छियै।

फेनु हँसतें-हँसतें बोलै, ''कभियो बड़ों शहर में रहलों होतियै, तबें नी।''

तबें दीदी के हम्में की समझैतियै कि अपनों अंगिका अपनी माय रं होय छै आरो तोहें अंगिका के साथें ससुराल के मजाक उड़ाय छैं, दीदी, पछतैवे।

आरो ई सोचथैं नन्दिता एक क्षण लेली काठ होय गेलों छेलै। अपना पर गोस्सो ऐलों छेलै कि अपने दीदी लें हेनों बात सोची लेलें छेलै।

''भाभी, देखों के-के ऐलों छौं तोरा देखै लें! आबें है नै बुझियों कि हम्में बोलाय कें लानलें छियै।'' हीतो नें भिड़कैलों दरवाजा के पल्ला हटैतें कहलें छेलै, ''हम्में तें कामों पर जाय रहलों छेलियै कि किशनगंजवाली चाची मिली गेलै, तोरों बारे में पूछलकै, तें कहलियै, हों कुछ दिन पहिले ऐलों छै। फेनु तें देखों चाची साथें के-के तोरा देखै लें आवी गेलों छौं। चाची कहै छै, हम्में तोरा नुकाय कें रखले छियौं। आबें तोंही सब सच-सच बतावों काकी कें। हम्में चललियों। दुकान पर पहुँचै में बेर होय रहलों छै।'' कही कें हीतो निकली गेलों छेलै आरो नन्दिता सामने में ठाढ़ी छवो चाची-मौसी के गोड़ छूवी-छूवी प्रणाम करै में लगी गेलै।

''होय गेलै, होय गेलै! डाँड़ो झुकी जैतों, रहें दौ'' एतवारी चाची कहलें छेलै, ''बड़की दीदी देह छोड़ी कें चल्ली गेली, मतर घरों में देवी आनी कें गेली। सच कहै छियौं, बेटी, तोरों हेनों पतोहू तें सब परिवारों कें मिलें। ताड़ गाछ हेनों ऊँच्चों शिक्षा पैलें छों, आरो घमंड एक पैसा के नै।''

''आबें हमरा सिनी कें बैठो लें कहवा कि ठाड़े रखवा?'' रिश्ता में सबसें छोटकी चाची हँसतें होलें कहलें छेलै, तें नन्दितो कहलकै, ''चाची, है घोंर तोरहे छेकौं, तोरहे घरों में हम्में तोरा बैठै लें की कहभौं।''

ई बात सुनी कें सब्भे के दिल एक्के साथ भरी ऐलै। एकाध के तें आँखो चुहचुहाय उठलै।

नन्दितां जेन्है कें आपनों गोड़ कोठरी दिस बढ़ैलकै कि झुलझुल बूढ़ी सकीचन के दादी बोललै, ''नै बेटी, कोठरी में नै, यहीं ऐंगनों में चटाय बिछावों, ओकरै पर बैठवै। केन्हों सुन्दर कातिकों के धूप खिल्लों छै। तोरे सोभावे नाँखी।''

दादी के बात सुनी कें सबके चेहरा खिली उठलै। नन्दिता झटकी कें कोठरी गेलों छेलै आरो दू चटाय लैकें आवी गेलों छेलै। ऐंगन्हें में चटाय बिछलों छेलै आरो एकेक करी कें सब वही पर आगू-पीछू जमी गेलों छेलै।

''एक्के घरों के दू बहिन आरो दोनो एक्के घरों के पतोहू। बड़की तें ससुराल हुलकौ लें नै आवै छै आरो छोटकी....''

अभी केशो माय के बात पूरो नै हुएँ पारलों छलै कि दादी ठोरों पर हाथ रखतें कहलकै, ''तें यै में आचरज करै के की बात छै, बड़ों छै तें सरंग पर, छोटों छै तें जमीन पर। सरंग पर रहैवाला कें देखै के किंछे बेकार—ऊ देखैवो नै करै। जे देखावै छै, ऊ जमीने परकों।''

शायत हेनों बात कें काटै के ख्यालों सें ही नन्दिता, जे सबसें कुछ हटिये कें बैठली छेलै, उठतें हुएँ कहलकै, ''दादी, राँची सें चाय के पत्ती आनलें छियै आरो राँचिये सें गोजा और दुधौरी आनलें छियै,

आपनें सिनी वास्तें, बरफ नाँखी डिब्बा में बंद करी कें अभी तें डिब्बा खोललों नै छियै।''

''बैठली रहों, बेटी, तोहें मिठाय सें कटियो टा कम नै छों। जाय वक्ती मुँह मिट्ठों कराय दियों।'' दादी फेनु बोली उठलों छेलै।

''की बोलियौं दादी, आपनें सिनी सें मिलै छियै, बात करै छियै, तें सतयुग के रीति-नीति के बारें में जानै छियै, जेकरों आबें चर्चा करवों लोगें समय बर्बाद करवों समझै छै।''

''तहीं सें तें घोंर लंका बनी रहलों छै, बेटी। लंकाहो में मंदोदरी छेलै, त्रिजटा छेलै, आबें तें मंदोदरीयो ताड़कासुर।''

नन्दिता देखलकै, दादी के चेहरा पर विचित्रे रं क्रोध उभरी ऐलों छेलै, मतर जल्दिये अपना पर काबू पैतें कहलें छेलै, ''तबें कोय बात नै छै, बेटी; तोरों हेनों धरती पर दसो-बीस टा लड़की बची जैतै, तें अजोधा-रं ई देश के मान-प्रतिष्ठा बची जैतै। खैर छोड़ो ई सब बातों कें, ई तें बोलों, तोहें ई गाँव में कहिया तक रहै लें ऐलों छों। हमरा मालूम छै तों पोस कबूतर नै छेकौ कि घरे के भाँड़ी में जिनगी काटी लें, वसंत के कोयल छेकी, दू-चार बार कुहू-कुहू करलकों, फेनू हेनों अलोपित होलों कि मत पूछों।''

दादी के बात सुनी कें सब एक्के साथ हँसी पड़लै आरो नन्दिता तें जेना कठुआय कें रही गेलै। ओकरों ई स्थिति कें देखी, दादी तुरत्ते बोली उठलै, ''आबें हमरों बातों कें तोंहे आपने ऊपर नै लै लियों। तोहें तें सास के देह छोड़ला के बाद घोंर आवियो जाय छों, हम्में तें आरो के कनियांय के बारे में कहलियौं, जे अपनों घरो कें नै पहचानै छै। तें तोहें बोललौ नै, बहू, कि कब तांय तोहें यहाँ छों। तोरा पावी कें तें हमरो सिनी के मोंन बहाल रहै छै।''

''दादी, हमरों मोन कहाँ होय छै कि ससुराल छोड़ी कें कहीं आरो बसौं। यहाँ आवै छियै तें कभियो नै लगै छै कि हमरा सास नै छै, जेठ सास नै छै, ननद नै छै, दियोर नै छै।''

''तें फेनु जैवे करै छों कथी लें?''

''बस एकरे तें उपाय में लगलों छियै दादी कि यहाँ सें शहर नै लौटै लें पड़ें। एत्तें बड़ों ऐंगन छै, सोचै छियै ठाठ-छप्पर के सहारा से हॉल बनाय दियै। गाँव के बच्चा कें पढ़ाना शुरू करी दियै।''

''अरे गाँव के बच्चे सिनी लें कैन्हें, रातकों इस्कूल हमरा सिनी वास्तें। आठ सें नौ, बस। फेनु तें हमरो सिनी के झुम्मर गावै के दिन लौटी ऐतै, की लक्ष्मी झूठ कहलियै?''

''एकदम सही बोललौ।'' सब जनानी एक्के साथ बोली उठलै।

''तें यही बातों पर आबें सबके मुँह मीठा होना चाही!'' ई कही कें नन्दिता उठलै आरो सीधे अपनों कोठरी दिस चल्लों गेलै। बाहर में सब्भे जनानी यही बोली रहलों छेलै, ''नीतो के माय भागमंती छेली, जे हेनों बहू पैलकी। आपनें तें देह छोड़ी कें चल्लों गेली, मतर जना अपनों संस्कार थाथी रूपों में रखी गेलै।

(६)

कातिक के महीना। रही-रही कें बूंदा-बूंदी तें होवे करी रहलों छलै, मतर हेनों भी हुवै कि झोंड़ पड़ै तें एकदम गरदौआ आरो वहा में करवा चौथ के परब। कातिक के बरखा सें कम उमंग नै छेलै नन्दिता में। हेनों तें कभियो वैं शृंगार नै करलें होतै। वैं अपना कें खूब सजैलें छेलै। रही-रही कें ओकरों मुँहों पर किसिम-किसिम के गीत उभरी आवै। कभियो तें किसन-राधा के मिलन के गीत, तें कभियो कोय शिव-पार्वती के गीत।

नीतो तें राँचिये में छेलै करवा चौथ हेनों परबो में। मतर नन्दिता जानै छै कि नौकरी के मामला छै, ओकरा केन्हौ कें छोड़ना मुश्किल। फेनु दिन भरी के निर्जला उपवास में होन्हौ कें साँझ पड़तें-न-पड़तें ओकरों देह थकें लगलों छेलै, तें संझवाती करला के बाद ऊ केबड़ा भिड़काय कें बिछौना पर लेटी गेलै। अभी आधो घंटा नै बितलों होतै कि ओकरों मोबाईल के रिंगटोन गनगनाय उठलै। देखलकै तें नीतो के टेलीफोन छेलै। सोचलकै, परब के शुभकामना दै लेली ही टेलीफोन करलें होतै। सोचिये कें ओकरों मोंन हरखित होय उठलै।

मतर हुन्नें सें जबें घबड़ैलों हेनों आवाज ऐलै, तें नन्दितो हड़बड़ाय कें उठी बैठलै। कहलकै, ''की बात होय गेलौं? तोहें एत्तें घबड़ैलें होलों कैन्हें छों?''

''सब बात मोबाइल पर बतैवों मुश्किल। इखनी बस एतन्है कहें पारौं कि भाभी के महत्वकांक्षा के कारण भैया के सब संपति पानी में बही गेलों छै। है तें तोरो मालूम छौं कि भैया जीवन भर के कमाय मकान बनाय में खर्च करी देलें छेलै। कचकचो तें तभिये सें शुरू होय गेलों छेलै, जबें जमीन भाभी अपनों नाम पर करवाय लें चाहै छेलै। पता नै, हेनों कैन्हें चाहै छेलै। नौकरी में भैया छेलै, तें लोन आसानी सें हुनकै मिलतियै। है भैया कें की मालूम छेलै कि भाभी जमीन अपनों नाम सें करवाय लें की-की तिकड़म करी रहलों छै। शहर के कै-कै

वकील सें सम्पर्क करलें होलों छै आरो केकरा-केकरा सें भारी रकम सूद पर लेवों करी रहलों छै। केकरों-केकरों पार्टी में केकरा-केकरा अपनों योजना सें जोड़ी रहलों छै। भैयो कें समझै में नै आवी रहलों छेलै कि अचानक चाँदनी के शान शौकत में एत्तें बढ़ौतरी केना आवी गेलों छै। खेल तें तबें सामना में ऐलै, जबें एक्के साथ कै लोग वहा दिन मकान पर आय धमकलै। सब अपन्हे में भिड़ी रहलों छेलै, ई जमीन हमरों नामे बेचलों गेलों छै, तें हमरों नामे छै। की कहियौं नन्दिता, जुटलों लोग में तें एक हेनों आदमी छेलै, जे कही रहलों छेलै, कि भाभी नें ऊ आदमी सें यहा कहलें छेलै कि ऊ दू साल पहिले राँढ़ होय चुकलों छै आरो ई जमीन बेची कें ऊ गाँव जाय लें चाहै छै।.... सब बात मिलला के बादे बतैभौं। इखनी बस एतन्हे जानी लें, जान बचाय कें भाभी-भैया हमरों क्वार्टर आवी गेलों छै। जमीन पर खड़ा आलीशान मकान राँची के एक सेठ नें खरीदी लेलें छै, आरो बाकी हकदार कें ओकरों पैसा जेना-तेना भैया चुकाय देलें छै। हमरौ पाँच लाख सें मदद करै लें पड़लै। आखिर चारे की छेलै। भैया के नौकरी तें जैवे करतियै, भाभियो जेलों में होतियै कि बाहर, के जानें पारें। पाँच रोज हम्में हेनों परेशान रहलां कि सुधियो नै लिएँ पारलियौं। अभियो सबकुछ ठीक-ठाक नै छै। भैया नौकरी छोड़ै के बात सोची लेलें छै, वही नौकरी जेकरा पावै लें भाभी कंपनी के मनैजर तक कें लोभाय के कोशिश करलें छेलै—है कही कि हमरों पति तें नशा में रहै छै आरो हुनका सें बढ़िया कामे नै, व्यापारियो कें लुभावें पारें। हौ तें मनैजर नें ई कही कें टारी देलें छेलै कि भैया साथें चालीस वर्ष तांय सेवा पर रहै के अनुबंध छै।... भाभी तें भैया के नौकरिये लै पर छेलै।

एकरो बाद भइये कहाँ नौकरी करै लें चाहै छेलै। हमरों सामन्हे हुनी भाभी कें बोलाय कें कहलें छेलै, ''चाँदनी तोहें स्वतंत्र छों, जहाँ नौकरी करें पारों। हम्में तोरा वास्तें नौकरियो छोड़ै लें तैयार छी। हम्में आपनों गाँव लौटै के निर्णय लै लेलें छियै, शेष जीवन सुख सें बितावै लें। तोहें चाहों तें अपनों लेली नया जीवनसाथियो चुनें पारै छों, हम्में

काँही सें रुकावट नै बनवौं। तोरों विचार शायत सहिये रहें कि एक पति पत्नी के स्वतंत्र जीवन में रोड़ा के अतिरिक्त कुछुवे नै छेकै।''

की कहियौं नन्दिता, ऊ दिन भाभी केन्हों फूटी-फूटी कें कानलों छेलै। सिर्फ लोर दरी रहलों छेलै, बोलें कुछुए नै पारी रहलों छेलै। कुछु बोलें पारलै तें एतन्है कि ''तोहें हमरा क्षमा करी दें! गाँव तोहें जैवे करै छों, तें हमरा नै छोड़ें पारों! हम्में तोरों अर्द्धांगिनी छेकियौं।''

ई बातों पर के नै पिघली उठतियै। भायजी के पिघलवों स्वाभाविक छेलै। हमरो मुँहों सें निकली पड़लों छेलै, ''इखनी कोय नै गाँव लौटतै।''

नन्दिता, तोहें हीतो कें साथ लेलें यहाँ आवी जा! हमरा पूरा विश्वास छै, वैं तोरों बात उठावें नै पारें। आबें तोरों यहाँ लौटले के बादे शेष बात होतै।'' ई कही कें नीतो नें संवाद काटी देलें छेलै।

नन्दितो बिछौना पर आवी कें लेटी गेलै, अपनों अंग-अंग कें ढीला करतें होलें। आँख मुनी लेलकै, तें लगलै, ओकरों सामना में चाँदनी आवी कें ठाढ़ी होय गेलों रहें। अभी ऊ कुछ बोलतियै कि चाँदनीये बोली उठलै, ''हमरों पाप के प्रायश्चिते की हुऍ पारें आरो हमरों हेनों कोन पाप छै, जे तोहें नै जानै छै नन्दिता!''

''हमरा सब मालूम छै, दीदी, मतर आबें ओकरा यादे करला सें की!''

''सहिये कही रहलों छैं, नन्दिता, लेकिन कहला सें शायत मोंन के भार हौलकों होय जाय। ऊ कत्तें अधर्म छेलै, पहलें तें हम्में अमित बाबू कें अपनों प्रेम में फाँसलियै, मकसद एक्के छेलै कि केन्हौ कें हुनकों सम्पत पर हमरों अधिकार होय जाय। लाख रुपया सें बेसिये कर्ज रूपों में लै लेलें छेलियै। हौ दिन जबें अपनों पैसा माँगै लें ऐलै, तें हुनका बदनाम करै के खयाले सें हम्में पास के क्वार्टर के भाभी कें बुलाना शुरू करी देलें छेलियै कि हमरों साथ जबर्दस्ती करै लें चाहै छै। औरतो जुटी गेलों छेलै, एक नै, बीसो औरत-मरद। मतर कोय विश्वास हमरा पर नै

करलें छेलै, अमित बाबू के निर्मल चरित्र के बारे में के नै जानै छेलै। पहलों दाफी लगलों छेलै कि जे रूप लैकें हम्में एत्तें घमंड करतें रहलों छी, ओकरों मोल भला लोगों के बीचों में कौड़ियो भर नै छै।''

''दीदी, आबें ई सब बातों कें कथी लें याद करवों।''

''सब कुछ भुलाय जाँव, बस यही लें तोरों लुग आवी रहलों छियै नन्दिता! आपनों लुग रहै लें देवैं नी, नन्दिता?''

''की बोलै छों, दीदी ...'' बात पूरा करौ नै पारलें छेलै कि ऊ उठी बैठलै। देखलकै, वहाँ कोय नै छेलै।

मतर सुनलों-देखलों बात याद करी कें नन्दिता के चेहरा कदम्ब फूल नाँखी खिली उठलों छेलै। वैं मोबाइल कें बड्डी प्रसन्न आँखों सें देखतें बोललै, ''हमरा मालूम छेलै, दीदी, कि एक-न-एक दिन तोहें अपनों घोंर लौटी कें ऐवौ जरूर। नै तें एत्तें दुख सहला के बादो मायं घर कें कैन्हें जोगतें रही गेलै, है बात तहूँ जानै छौ। खैर, आबें ऊ सब बातों कें गेठी में बाँधीये कें रखलाहै सें की। लौटी रहलों छियौं दीदी, जल्दिये, हीतो कें साथें लेलें।''

एतना बोली नन्दिता एक दाफी फेनु बिछौना सें उठलै आरो एक पुरानों रं तस्वीर के आगू आँख मुँदलें देर तक ठाढ़िये रहलै, जब ताँय चाँद एकदम पच्छिम दिशा में नै आवी गेलों छेलै।''

❐❐

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.
जन्म स्थान : भागलपुर
माता का नाम : जीवनलता पूर्वे
पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे
शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी
प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित
सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत-संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर) ५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ६. केकरोॅ चाँद केन्होॅ चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली), १०. कर्ण महाकाव्य : संवेदना और रूप-शिल्प (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली), ११. अंगिका लोकगीत
प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), ३. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास), ४. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ५. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ६. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), ७. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ८. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ९. शिशिर की धूप (कविता संग्रह), १०. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), ११. ताँका शतक, १२. मंदोदरी (अंगिका प्रबंध काव्य),१३. आकाशगंगा(हायकू), १४. ऋतुरंजन (कविता संग्रह), १५. अंगिका व्याकरण आरो रचना कला (सह-लेखन), १६. कर्ण महाकाव्य का सौन्दर्य सौष्ठव, १७. अंगिका काव्यशास्त्र (सह-लेखन), १८. हे माय गांग (कविताएँ), १९. वंदे मातरम् (अंगिका नाटक), २०. वापसी (लघु अंगिका उपन्यास)
सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)

'वापसी' : मेरी नजर में

मैंने डॉ. आभा पूर्वे के लघु उपन्यास 'वापसी' को आरम्भ से अंत तक देखा। यह केवल किसी पात्र के घर लौटने की कथा नहीं है; इसका गहरा अर्थ है—एक स्त्री का वर्षों बाद अपने निर्णय, अपनी जड़ों और अपने जीवन पर अधिकार की ओर लौटना। लेखिका स्वयं आरम्भ में इसकी विधागत पहचान पर विचार करती हैं और अंततः इसे लघु उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

'वापसी' : घर की ओर नहीं, अपने होने की ओर लौटती स्त्री

डॉ. आभा पूर्वे का 'वापसी' आकार में छोटा, पर अपने कथ्य में व्यापक लघु उपन्यास है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी बड़े सामाजिक प्रश्न को घोषणाओं और विमर्श की भाषा में नहीं उठाता। कथा घर, आँगन, रिश्तों, स्मृतियों, बातचीत और स्त्री के भीतर चलने वाले धीमे आत्मसंवाद से अपना अर्थ अर्जित करती है।

उपन्यास का आरम्भ ही जीवन की अस्थिरता और घरेलू संसार के वातावरण से होता है। कथा बहुत जल्दी पाठक को उस पारिवारिक संरचना के भीतर पहुँचा देती है जिसमें उम्र, विवाह, नौकरी, आर्थिक निर्भरता, मायका-ससुराल और स्त्री के अपने निर्णय आपस में उलझे हुए हैं।

कथा के केन्द्र में नन्दिता का व्यक्तित्व धीरे-धीरे उभरता है। लेखिका उसे किसी असाधारण नायिका की तरह प्रस्तुत नहीं करतीं। वह

उसी सामाजिक संसार की स्त्री है, जिसे परिवार और परिस्थितियों ने अनेक भूमिकाएँ दी हैं, लेकिन जिसने अपने भीतर कहीं अपना स्वतंत्र अस्तित्व बचाए रखा है। उपन्यास के दूसरे और तीसरे खण्ड तक पहुँचते-पहुँचते पारिवारिक संवादों के बीच नन्दिता के अतीत और वर्तमान की परतें खुलने लगती हैं।

यहाँ 'वापसी' का अर्थ महत्वपूर्ण हो जाता है। यह केवल भौगोलिक वापसी नहीं है। शहर से गाँव या एक घर से दूसरे घर लौट आना इसका बाहरी रूप है। वास्तविक वापसी उस क्षण आरम्भ होती है जब नन्दिता यह समझने लगती है कि जीवन के शेष हिस्से को भी दूसरों की इच्छाओं के अनुसार जीना आवश्यक नहीं है। इसीलिए उपन्यास में गाँव केवल पृष्ठभूमि नहीं रहता। वह स्मृति, संबंध और पुनर्निर्माण का स्थान बन जाता है। गाँव के बच्चों को पढ़ाने जैसी संभावना का उभरना विशेष अर्थ रखता है। नन्दिता की वापसी निष्क्रिय पलायन नहीं है; वह अपने लिए एक नया सामाजिक उपयोग और नया जीवन-सन्दर्भ खोजने की कोशिश भी है। पाँचवें खण्ड तक आते-आते दादी, चाची, परिवार और पुराने घर की स्मृतियाँ नायिका के वर्तमान निर्णय से जुड़ने लगती हैं।

स्त्री-विमर्श, लेकिन बिना नारे के

इस रचना की एक उल्लेखनीय उपलब्धि इसका स्त्री-पक्ष है। विवाह, पति-पत्नी का संबंध, आर्थिक सुरक्षा, स्त्री की नौकरी, पारिवारिक दायित्व और स्वतंत्र जीवन जैसे प्रश्न कथा में मौजूद हैं; लेकिन लेखक उन्हें सिद्धान्त की तरह पाठक के सामने नहीं रखतीं। इसी कारण नन्दिता अधिक विश्वसनीय लगती है। वह विद्रोह का प्रतीक मात्र नहीं बनती। उसमें संकोच है, स्मृति है, परिवार के प्रति लगाव है, अपने निर्णयों को लेकर द्वंद्व है और फिर धीरे-धीरे स्पष्ट होती आत्मचेतना भी है। चौथे खण्ड में उसके भीतर चल रहे विचारों और जीवन-अनुभवों का विस्तार कथा को मनोवैज्ञानिक आधार देता है।

अंगिका इस कथा की शक्ति है

'वापसी' का दूसरा बड़ा गुण उसकी अंगिका भाषा है। यहाँ

भाषा केवल कथा कहने का माध्यम नहीं, कथा का सांस्कृतिक परिवेश भी रचती है। घरेलू संबोधन, दादी-चाची के संवाद, विवाह और परिवार की बोलचाल तथा गाँव की सहज बातचीत पुस्तक को वह स्थानीय प्रामाणिकता देती है जिसे मानक हिन्दी में रूपांतरित करने पर कुछ हद तक खोना पड़ सकता था।

संवादों में अंगिका का जीवित रूप दिखाई देता है। कई जगह ऐसा लगता है जैसे कथा पढ़ नहीं रहे, बल्कि घर के आँगन में बैठकर परिवार की बातचीत सुन रहे हों। यही इसकी बड़ी साहित्यिक उपलब्धि है।

कथाशिल्प की विशेषता

लेखिका ने इसे छह खण्डों में विकसित किया है। कथा में बड़ी घटनाओं की अपेक्षा बातचीत, स्मृति और छोटे पारिवारिक प्रसंग अधिक हैं। अंतिम खण्ड में फोन, परिवार, आर्थिक उलझन और भविष्य के निर्णय कथा को समापन की ओर ले जाते है।

यह शिल्प उपन्यास को आत्मीय बनाता है, लेकिन यही वह स्थान है जहाँ थोड़ा संपादकीय कसाव इसे और प्रभावी बना सकता था। कुछ संवाद अपेक्षाकृत लंबे हैं और एक ही भाव या पारिवारिक परिस्थिति की सूचना कभी-कभी दूसरी तरह से फिर सामने आती है। 10-15 प्रतिशत कसाव से कथा की गति और तीखी हो सकती थी। फिर भी यह कमी कथ्य को क्षति नहीं पहुँचाती।

एक और विशेषता है कि इसमें कोई कृत्रिम चरमोत्कर्ष नहीं बनाया गया। अंत बहुत शांत है। नन्दिता पुराने चित्र के सामने खड़ी है, पर उसकी स्मृति अब केवल पीछे नहीं जाती; उसमें आगे की दिशा भी जुड़ गई है। यही उपन्यास के शीर्षक को उसका पूरा अर्थ देता है। यह समापन मुझे पुस्तक का सबसे सफल कलात्मक क्षण लगता है।

समग्र मूल्यांकन

'वापसी' को केवल स्त्री-विमर्श की पुस्तक कहना इसकी सीमा बाँध देना होगा। यह उम्र के एक पड़ाव पर खड़ी स्त्री के उस प्रश्न की

कथा है—

"अब जो जीवन बचा है, वह किसका है?"
परिवार का?
विवाह का?
समाज का?
या स्वयं उसका?

डॉ. आभा पूर्वे इस प्रश्न का भाषणात्मक उत्तर नहीं देतीं। वे नन्दिता को धीरे-धीरे अपना उत्तर खोजने देती हैं। इसी कारण 'वापसी' का वास्तविक अर्थ अंततः घर-वापसी से अधिक आत्म-वापसी बन जाता है।

पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर दिया गया लेखिका का परिचय उनके व्यापक अंगिका-साहित्यिक कार्य, उपन्यास, कहानी, कविता, आलोचना और संपादन की पृष्ठभूमि भी सामने रखता है।

एक पंक्ति में कहूँ तो :

'वापसी' उस स्त्री की शांत लेकिन दृढ़ कथा है, जो बहुत दूर चले आने के बाद समझती है कि असली घर वह जगह है, जहाँ वह अपने जीवन का निर्णय स्वयं कर सके।

मेरी दृष्टि में इस रचना की सबसे बड़ी उपलब्धि इसका विषय नहीं, उसका निर्वाह है। लेखिका ने स्त्री की स्वतंत्रता की बात कही है, लेकिन नन्दिता को किसी घोषणा-पत्र में नहीं बदला। यही इसे साहित्य बनाता है।

—रंजन

चित्रशाला, खलीफाबाग
भागलपुर (बिहार)